शहर में कितनी सुरक्षित है महिलाएं

Jagori Script

	नमस्कार श्रोताओं कार्यक्रम में आपका स्वागत है, इस कार्यक्रम में मैं हूँ..... आप सभी को मेरा प्यार भरा नमस्कार! दोस्तों, मेरे साथ हैं मेरे दोस्त.....
	श्रोताओं, आप सभी को मेरा भी प्यार भरा नमस्कार!
	दोस्तों, जैसा कि आप जानते ही हैं, कि आज के कार्यक्रम में हम बात करने जा रहे हैं महिलाओं की सुरक्षा के बारे में..
	इस कार्यक्रम में जानने की कोशिश करेंगे कि महिलायें और लडकियां अपने आपको कितना सुरक्षित समझती है एक शहर में,
	और साथ ही ये भी समझेंगे की एक महिला की हिफाज़त और शहर की बनावट का क्या रिश्ता है,
	तो..... आपको क्या लगता है हमारे शहर के बारे में?
	..... मेरे शहर यानी दिल्ली के बारे मे?
	जी हाँ, बिल्कुल क्योंकि दिल्ली की तो देश के सबसे अच्छे महानगरों में गिनती होती है और साथ ही ये देश की राजधानी भी है
	..... दिल्ली की महिलाएं को भी शारिरिक हिंसा का सामना करना पड़ता है, जिसमें उनके साथ आस-पास ही नही बल्कि शहर के सार्वजनिक स्थानों पर होने वाली शारिरिक हिंसा व जोर जबरदस्ती भी शामिल है।
	इस तरह की घटनाएं आये दिन हो रही हैं, इससे पता चलता है कि शहर में महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा को आम बात माना जाने लगा है।
	दिल्ली में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर जागोरी ने वर्ष २००४ से लेकर अब तक कई अध्ययन और शोध कार्यक्रम और बड़े पैमाने पर सुरक्षा ऑडिट यानि सेफ्टी ऑडिट किये हैं
	तो.....! इन अध्ययनों और सुरक्षा ऑडिट यानि सेफ्टी ऑडिट में क्या पता चला? ....., विभिन्न शोध कार्यक्रमों और अध्ययनों के निष्कर्ष इस बात

	की तरफ संकेत करते हैं कि महिलाएं दिल्ली में ज़्यादातर असुरक्षित महसूस करती हैं| वे लगातार यौन हमलों और यौन उत्पीड़न के अनुभव और भय से जूझती रहती हैं।
	दिल्ली में महिलाओं की सुरक्षा के बारे मे अच्छी तरह से जानने और एक साफ़ तस्वीर बनाने के उद्देश्य से मार्च २०१० में शहर के नौ जिलों में एक सर्वेक्षण किया गया
	इस सर्वेक्षण में शहर के लगभग पांच हज़ार महिलाओं और पुरुषों ने हिस्सा लिया |
	इसमें तीन हजार आठ सौ पन्द्रह महिलाओं, नौ सौ चौआलीस पुरुषों और दो सौ पचास सामान्य प्रत्यक्षदिर्शियों से बात की गई।
	इन सभी लोगों से महिलाओं की सुरक्षा से जुड़े कई तरह के सवाल पूछे गए
	जिन महिलाओं व पुरुषों से बात की गई उन सभी की उम्र सोलह साल से अधिक थी।
	सर्वेक्षण के दौरान विभिन्न प्रकार के सार्वजनिक स्थानों पर सभी तरह के लोगों से बातचीत की गई।
	सर्वेक्षण के लिए बाजारों, पाको, बस स्टॉप और आवासीय इलाकों आदि में जाकर लोगों से बात की गई।
	इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि महिलाएं किस तरह के उत्पीड़न का सामना करती हैं|
	इस हिंसा को किन चीजों से बढ़ावा मिलता है, इन घटनाओं पर समाज का क्या रवैया रहता है?
	क्या महिलायें ऐसी घटनाओं के बारे में पुलिस को बताती है? और यदि बताती हैं तो पुलिस की भूमिका क्या रहती है?
	इस अध्ययन के अनुसार यदि उत्पीड़न के स्थानों के हिसाब से देखें तो महिलाएं सबसे ज्यादा उत्पीड़न बाजारों में झेलती हैं।
	शारीरिक उत्पीड़न स्कूली विद्यार्थियों में सबसे अधिक लगभग इकतालीस फीसदी पाया गया है

	स्कूल और कॉलेज जाने वाली छात्राओं में सार्वजनिक स्थानों पर उत्पीड़न की सबसे अधिक आशंका दिखाई देती हैं
	स्ट्रीट लाइट्स, सार्वजनिक परिवहन और सड़क किनारे शौचालय जैसी आधारभूत/बुनियादी सुविधाएँ, महिलाओं के लिए अनुकूल उचित सुविधाओं के अभाव से दिल्ली काफी असुरक्षित हो गई है।
	सार्वजनिक वाहन, बसें आदि सार्वजनिक दायरों में महिलाओं को सबसे ज्यादा यौन उत्पीड़न झेलना पड़ता है।
	इसके अलावा, सार्वजनिक स्थानों, खासतौर से पुरुषों के व्यवहार व रवैये से भी असुरक्षा बढ़ जाती है।
	महिलाएं यौन उत्पीड़न की समस्या से निपटने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाती हैं। वे अकसर उत्पीड़क का वे अकसर उत्पीड़क को पलट कर जवाब देती हैं, कई बार परिवार और दोस्तों से मदद मांगती हैं।
	लेकिन मदद के लिए पुलिस के पास बहुत कम ही जाती हैं |
	दोस्तों, इस मुद्दे पर और अधिक जानकारी देने के लिए इस समय हैं हमारे साथ हमारी खास मेहमान.....
	तो आइये सुनते हैं, उनसे ये बात चीत
	INTERVIEW
	आप सबका एक बार फिर स्वागत है कार्यक्रम में, जिसमें आज हम बात कर रहें हैं महिला सुरक्षा के बारे में
	और इस कार्यक्रम में हम ये जानने की कोशिश कर रहे हैं कि हमारा शहर महिलाओं के लिए कितना सुरक्षित हैं?
	जब हम महिला हिंसा की बात करते हैं तो उसमें शहर में उपलब्ध मूलभूत बुनियादी सुविधाओं की बात करना भी बहुत ज़रूरी है, क्यूंकि ये महिलाओं की सुरक्षा से जुड़ा है
	आधारभूत सुविधाएँ, शहर के बनावट से जुडी होती हैं.... मतलब जैसे शहर में रात के समय सड़कों पर लाईट होना, सही दूरी पर शौचालय होना, इत्यादि

	उदाहरण के लिए अगर किसी इलाके में लाईट की उचित व्यवस्था नही है तो ये महिलाओं व लडकियों लिए एक तरह की असुरक्षा का मुद्दा है
	इस विषय पर किये गये शोध और अध्ययन से पता चला कि औरतों द्वारा हिंसा के अनुभव और हिंसा का डर, दिन रात हर समय, हर तरह के सार्वजनिक जगहों पर हुआ।
	इसलिए एक शहर की बनावट कैसी है, यह एक महत्वपूर्ण हिस्सा है सुरक्षा का
	बिलकुल सही बात है, क्या शहर की सडके ऐसी हैं जिस पर आसानी से महिला गुजर सकती है या क्या शहर के पार्क ऐसे हैं जिन्हें महिलाएं किसी भी समय आसानी से प्रयोग कर सकती हैं।
	देखने में ज्यादातर यही आता है कि पार्को का इस्तेमाल ज्यादातर पुरुष ही करते है।
	इन पार्को का इस्तेमाल पुरुष आराम करने, जुआ खेलने ,झुंड बनाकर गप्प हांकने आदि के लिए करते है।
	ज्यादातर सार्वजनिक स्थानों पर लाईटो की उचित व्यवस्था भी नही है।
	एक खास बात और है, वह ये कि, क्या इन सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के लिए पब्लिक शौचालय हैं कि नहीं?
	दिल्ली में महिलाओं के लिए नाममात्र के पब्लिक शौचालय है। ऐसा लगता है कि जब महिला सडक पर निकलती है तो उन को पब्लिक शौचालय की जरुरत जैसे है ही नही।
	जो पब्लिक शौचालय महिलाओं के लिए हैं भी वह बहुत खराब हालत में हैं।
	तो क्यों न इसी विशय पर एक लधु नाटिका सुनी जाएं
	- DRAMA -
	सच में ..... कभी- कभी हम महिलाएं हिंसा झेलते -झेलते इतनी निराश हो जाती हैं कि इसी हिंसा को अपनी नियती मान लेती हैं और पूरी

	जिंदगी भर हिंसा झेलती हैं।
	हमें ना कहना होगा ऐसी हिंसा को, और कहना होगा सरकार व आम जनता से की वह महिला हिंसा को खत्म करने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाए।
	बिलकुल सही बात है, हिंसा के लिए ना कहना होगा। इसके साथ ही एकजुट होना होगा महिलाओं हिंसा के खिलाफ।
	यह मामला सिर्फ महिलाओं का नही बल्कि पूरे समाज का है।पूरे समाज को एक साथ बदलाव के लिए आगे आना होगा।